Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
1   
   
   
ह िंदी साह त्य   
(सामान्य परिचय)   
साह त्य क्या ै?   
‘साहित्य’ शब्द सहित से बना िै। सहित क  
े दो अर्थ िैं- सार्-सार् और हित-युक्त। पिले अर्थ पर हिचार करें   
तो िम देखते िैं हक साहित्य में दो तत्व िमेशा एक सार् चलते िैं- शब्द और अर्थ। साहित्य में शब्द और अर्थ   
का प्रयोग एक अलग खूबसूरती क  
े सार् हकया जाता िै। साहित्य में शब्द और अर्थ दोनोों सुोंदरता लाने में   
परस्पर प्रहतस्पर्धी रिते िैं। सुोंदर शब्द और सुोंदर अर्थ का सहित या सार्-सार् िोना िी साहित्य िै। जैसे-   
वे क  
ुछ हदन हकतने सुिंदि थे ।   
जब सावन घन सघन बिसते।।   
   
जयशोंकर प्रसाद की ‘िे क  
ुछ हदन’ शीर्थक इस कहिता में स्मृहत भाि की अहभव्यक्तक्त िै। इस अहभव्यक्तक्त क  
े   
कारण इसमें अर्थ की सुोंदरता आ गई िै। इसमें हजस प्रकार का अर्थ िै कहि ने उसी प्रकार क  
े सुोंदर शब्दोों   
का हिन्यास भी हकया िै। साहित्य का द  
ूसरा अर्थ ‘सहित’ अर्ाथत् हित-युक्त िै। इसका आशय िै हक साहित्य   
सबक  
े हित ि कल्याण की भािना लेकर चलता िै। उसक  
े मूल में सामाहजकता ि सामूहिकता का भाि िै।   
साहित्य क  
े दो पक्ष िैं- कला पक्ष तर्ा भाि पक्ष। इन्ीों को अहभव्यक्तक्त पक्ष और अनुभूहत पक्ष भी किा जाता   
िैं। अर्थ की सुोंदरता से उसका भाि पक्ष मनोिर िोता िै जबहक शब्द की सुोंदरता से उसका कला पक्ष   
उत्क  
ृष्ट बनता िै। भाि या अनुभूहत पक्ष का सोंबोंर्ध यहद अोंतरोंग तत्वोों से िै तो अहभव्यक्तक्त या कला पक्ष का   
सोंबोंर्ध बहिरोंग तत्वोों से िै। साहित्य को पढ़कर या सुनकर अर्िा नाटक को देखकर िम हजस सौदयथ का   
अनुभि करते िैं उससे िमें आनोंद हमलता िै। पुराने आचायो ने सौोंदयथ क  
े इस अनुभि (सौोंदयथनुभूहत) को   
‘आस्वाद’ किा िै। यि सौोंदयाथनुभूहत या आस्वाद िी साहित्य का सार िै।   
   
हनष्कर्थतः किा जा सकता िै हक साहित्य शब्द और अर्थ दोनोों क  
े समक्तित सौोंदयथ से हनहमथत ऐसी मोंगलकारी   
रचना िै, जो रचनाकार क  
े भािाे  
े, हिचारोों या आदशाथे  
ेको पाठक या समाज तक सोंप्रेहर्त करती िैे  
े।   
साह त्य का प्रयोजन   
साहित्य का प्रयोजन दो दृहष्टयोों से बताया जा सकता िै- हनमाथण (रचना) की दृहष्ट से तर्ा ग्रिण की दृहष्ट से।   
कोई भी साहित्यकार रचना क्ोों करता िै? क्ाोंहक िि अपनी बात द  
ूसरो तक पहुचाना चािता िै। इस   
प्रकार साहित्यकार क  
े भािोों या हिचारोों का सोंप्रेर्ण साहित्य का एक प्रयोजन िै। अपनी बात द  
ूसराे  
े तक   
सोंप्रेर्ण से साहित्यकार को आक्तिक सुख अर्िा सोंतोर् हमलता िै। गोस्वामी तुलसीदास ने इसी को ‘स्वाोंतः   
सुखाय’ किा िै। इसक  
े सार् िी साहित्यकार को अपनी रचना से यश भी हमलता िै। इसीहलए पुराने

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
2   
   
   
आचायो ने आनोंद की प्राक्ति क  
े सार् यश और अर्थ की प्राक्ति को भी साहित्य क  
े प्रयोजनोों में शाहमल हकया   
िै। हकन्तु यि सत्य िै हक कोई भी साहित्यकार मुख्य रूप से यश या र्धन पाने क  
े हलए रचना निीों करता।   
अब यहद ग्रिण की दृहष्ट से हिचार करें तो साहित्य क  
े अध्ययन से िमें क्ा हमलता िै? साहित्य क  
े अध्ययन से   
िम अपने समय, समाज और सोंसार क  
े हिर्य में ऐसी अनेक बातें जान सकते िैं जो िमें पिले हिहदत निीों   
र्ीों। साहित्य िमें बताता िै हक मनुष्य को हकन पररक्तिहतयोों में क  
ैसा व्यििार या आचरण करना चाहिए।   
साहित्य मक्तिष्क की उिथरता और ज्ञान की िृक्ति क  
े हलए िै। िि मनुष्य में सािस और शक्तक्त का सोंचार   
करता िै, उसे नैहतक दृहष्ट से अहर्धक सबल बनाता िै। िि िमारे जीिन-सोंसार में जो क  
ुछ सुोंदर, भव्य और   
उदात िै, उससे िमारा पररचय कराता िै हजसक  
े द्वारा िम अपने व्यक्तक्तत्व को बेितर बना सकते िैं। इस   
तरि साहित्य िमें स्वार्थ और सोंकीणथता से मुक्त िोने की हदशा में आगे ले जाता िैं। सबसे बढ़कर साहित्य   
िमें ऐसा साक्तत्वक आनोंद प्रदान करता िै हजसे सोंसार की अन्य भौहतक ििुओों क  
े द्वारा िम निीों पा सकते।   
आचायथ भामि ने साहित्य क  
े कीहतथ और प्रीहत- ये दो प्रयोजन बताए िैं। इसक  
े सार् िी पुराने आचायो ने   
पुरूर्ार्थ की हसक्ति को भी साहित्य का प्रयोजन माना िै। पुरूर्ार्थ का आशय िै मानि-जीिन का लक्ष्य।   
िमारी परोंपरा में मानि-जीिन क  
े चार पुरूर्ार्थ माने गए िैं- र्धमथ, अर्थ, काम तर्ा मोक्ष।   
साहित्य क  
े अध्ययन से िमें न क  
ेिल इन चारोों पुरूर्ार्ो की जानकारी हमलती िै बक्ति इनको सिी रूप में   
प्राि करने की प्रेरणा और हदशा भी हमलती िै। इन सब प्रयोजनोों क  
े उद्देश्ोों की पूहतथ क  
े द्वारा साहित्य एक   
बेितर समाज की रचना में अपनी भूहमका हनभाता रिा िै।   
तुलसीदास क  
े ‘रामचररतमानस’ ने करोड़ाे  
े भारतीय नर-नाररयोों को सच्ची राि हदखायी। कबीर की साक्तखयोों   
या दोिोों ने पाखोंड और क  
ुरीहतयोों की राि से िटने की प्रेरणा दी िै। भारतेन्दु, प्रेमचोंद, पोंत, प्रसाद, हनराला,   
आहद साहित्यकारोों का साहित्य पढ़कर िम साहित्य और उदात्त जीिन-मूल्योों की ओर अग्रसर िोते िैं।   
साह त्य की हवधाए  
िं   
पद्य-हवधाए  
िं : प्रबिंधकाव्य   
प्रबोंर्धकाव्य एक ऐसी साहिक्तत्यक रचना िै हजसमें सभी पद्य एक कर्ा, हिचार या भाि क  
े माध्यम से एक-  
द  
ूसरे से सोंबि रिते िैं। उसमे आरोंभ से अोंत तक एक मूल भाि बना रिता िै। प्रबोंर्ध क  
े दो मुख्य भेद िैं-  
मिाकाव्य तर्ा खोंडकाव्य।   
म ाकाव्य   
मिाकाव्य का अर्थ िै मिान काव्य। मिाकाव्य में आकार, कर्ानक, पात्र और शैली की दृहष्ट से मित्ता रिती   
िै अर्ाथत् इसमें मिापुरूर्ोों का प्रेरणादायक चररत्र िोता िै, किानी भी बड़ी िोती िै तर्ा इसका आकार भी   
बड़ा िोता िै। मिाकाव्य हिहभन्न अध्यायोों या खोंडोों (सगथ) में बोंर्धा िोता िै। इसमें जो कर्ा ली जाती िै िि   
इहतिास-प्रहसि भी िो सकती िै या प्राचीन कर्ा को कहि-कल्पना क  
े समािेश क  
े सार् भी प्रिुत हकया जा

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
3   
   
   
सकता िै। इसमें हकसी एक मिान् व्यक्तक्त का या क  
ुछ मिान् व्यक्तक्तयोों का चररत्र प्रिुत हकया जाता िै।   
कर्ानक का हिकास इस प्रकार िोता िै हक उसमें मनुष्य जीिन और सृहष्ट क  
े हिहभन्न पक्षाे  
ेे  
ों क  
े सुोंदर िणथन   
बीच-बीच में जुड़ते चले जाते िैं। मिाकाव्य में सभी रसोों की अहभव्यक्तक्त िोती िै, पर श्ृोंगार या िीर आहद   
हकसी एक रस की प्रर्धानता िो सकती िै। इसी प्रकार इसमें चारोों पुरूर्ार्ों का िणथन रिता िै और उनमें   
कोई एक पुरूर्ार्थ प्रर्धान िो सकता िै।   
मिापुरूर्ोों क  
े चररत्र या उदात्त चररत्र की प्रिुहत मिाकाव्य में रिनी चाहिए। उसमें मनुष्य-जीिन और जगत   
क  
े हिहभन्न पक्षोों का हचत्रण भी अपेहक्षत िैे  
ै। मिाकाव्य में आस्वाद या सौोंदयाथनुभूहत की दृहष्ट से हिहिर्धता   
िोनी चाहिए। डा॰ भगीरर् हमश् ने मिाकाव्य का स्वरूप बताते हुए चार आर्धारभूत तत्व बताए िैं- मिान   
कर्ानक, मिान चररत्र, मिान सोंदेश और मिान शैली। इस प्रकार ‘मिाकाव्य कर्ानक की दृहष्ट से एक ऐसी   
सुसोंबि रचना िै, हजसमें उत्क  
ृष्ट या उदात्त भािोों की अहभव्यक्तक्त िो।’   
हिन्दी क  
े पुराने मिाकाव्योों में चोंदरबदाई का ‘पृथ्वीराजरासो’, जायसी का ‘पद्माित’ तर्ा गोस्वामी तुलसीदास   
का ‘रामचररतमानस’ प्रहसि िै। आर्धुहनक काल क  
े मिाकाव्योों में अयोध्याहसोंि उपाध्याय िररऔर्ध का   
‘हप्रयप्रिास’, मैहर्लीशरण गुि का ‘साक  
ेत’, जयशोंकर प्रसाद की ‘कामायनी’ आहद का नाम हलया जा   
सकता िै।   
खिंडकाव्य   
खोंड का अर्थ अोंश या हिस्सा िोता िै। मिाकाव्य का िी आोंहशक रूप से अनुकरण करने िाली हिर्धा   
खोंडकाव्य किी जाती िै। खोंडकाव्य में कोई एक प्रसोंग, घटना, हकसी बड़ी कर्ा का एक अोंश या हकसी एक   
हिर्यििु का िणथन िो सकता िै, मिाकाव्य की भाोंहत इसमें जीिन की समग्रता और पूरी कर्ा निीों िोती।   
राष्ट  
रकहि मैहर्लीशरण गुि का ‘जयद्रर् िर्ध’ एक खोंडकाव्य िै, क्ोोंहक इसमें मिाभारत की पूरी कर्ा न   
िोकर क  
ेिल अजुथन क  
े द्वारा जयद्रर् क  
े मारे जाने की घटना का िी िणथन हकया गया िै। इसी प्रकार गुिजी   
की ‘पोंचिटी’ और रामर्धारी हसोंि ‘हदनकर’ का ‘रक्तिरर्ी’ भी खोंडकाव्य िै।   
मुक्तक काव्य   
मुक्तक स्वतोंत्र तर्ा अपने आप में पूरी रचना िै। एक ऐसा पद्य या क  
ुछ पद्योों का समि, जो अपने आप में पूरा   
िो, मुक्तक किलाता िै। इसमें हसलहसलेिार कोई कर्ा निीों िोती। मुक्तक क  
े दो प्रकार िैं- गेय मुक्तक   
तर्ा अगेय मुक्तक।   
पद- कबीर, सूर, तुलसी, मीरा आहद भक्त कहियोों क  
े गीतोों को पद किा गया िै। पद आराध्य क  
े प्रहत   
समपथण क  
े भाि से रचे जाते िैं। कबीर, सूर, मीरा, रैदास, आहद क  
े पद इसक  
े उत्तम उदािरण िैं। जैसे,   
तुलसीदास का यि पद-   
   
मन पहछते ैं अवसि बीते!

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
4   
   
   
दुर्लभ दे पाइ रिपद भजु, किम, वचन अरू ी ते।   
गीत   
 मुक्तक का ऐसा रूप जो गाए जाने क  
े हलए िी िो, गीत किलाता िै। प्रत्येक गीत में दो भाग रिते िैं- िायी   
और अोंतरा। पिली पोंक्तक्त हजसे बाद में बार-बार दोिराया जाता िै, िायी किलाती िैं। शेर् पोंक्तक्तयॉ अोंतरा   
किलाती िैं। गीत में िायी और अोंतरोों की सभी पोंक्तक्तयॉं गायन क  
े अनुसार ताल, लय, तर्ा छ  
ोंद में बॅर्धी   
िोती िैं। अोंत्यानुप्रास (तुक) का हनिाथि भी गीत की सभी पोंक्तक्तयोों मे िोता िै। आर्धुहनक गीत में ऊपर बताए   
गए लक्षणोों क  
े अहतररक्त हनम्नहलक्तखत चार तत्व हिशेर् रूप से हमलते िैं।   
• वैयक्तक्तकता   
• भावमयता   
• प्रवा मयता   
• सिंहिप्तता   
   
प्रगीत   
मुक्तक श्ेणी की रचनाओों में प्रगीत अपेक्षाक  
ृत नई हिर्धा िै। इसे गीहतकाव्य भी किते िैं। अोंग्रेजी मेंे  
ों इसे   
‘हलररक’ किा जाता िै। प्रगीत में गीत क  
े सभी लक्षण लागू िोते िैं, पर इसका गाया जाना अहनिायथ निीों िै।   
प्रगीत एक ऐसी लयबि पद्य रचना िै, जो छ  
ोंद या मुक्त छ  
ोंद में भी िो सकती िै तर्ा हजसमें कहि की हनजी   
भािनाएे  
ॅ व्यक्त िोती िै। भािनाओों की तीव्रता इसकी हिशेर्ता िै। हनराला की रचना ‘स्नेि हनर्थर बि गया   
िै’ प्रगीत का अच्छा उदािरण िै-   
स्ने -हनर्लि ब गया ै।   
िेत ज्ोिं तन ि गया ै।   
आधुहनक काव्य की अन्य हवधाएॅ  
 ॅ  
िं   
   
र्िंबी कहवता   
आर्धुहनक साहित्य में खोंडकाव्य का िान लोंबी कहिता ने ले हलया िै लोंबी कहिता प्रायः मुक्त छ  
ोंद में हलखी   
जाती िै। यि िणथनािक, हििरणािक, भािप्रर्धान िो सकती िै। हनराला की ‘राम की शक्तक्त पूजा’,   
मुक्तक्तबोर्ध की ‘अोंर्धेरे में’ या अज्ञेय की ‘असाध्य िीणा’ लोंबी कहिता क  
े उदािरण िैं।   
   
   
चतुष्पदी

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
5   
   
   
 मुक्तक क  
े अोंतगथत प्रगीत का िी एक प्रकार िै। इसका हिशेर् स्वरूप यि िै हक इसमें चार िी पोंक्तक्तयॉं   
िोती िैं। यि चार पोंक्तक्तयोों की अपने आप में सोंपूणथ कहिता िै। इसे गाया भी जा सकता िै और इसका सस्वर   
पाठ भी याद हकया जा सकता िै।   
अतुकािंत कहवता   
तुक या अोंत्यानुप्रास अनेक छ  
ोंदोों में रिता िै। आर्धुहनक कहिता में ऐसे छ  
ोंदो का प्रचलन हुआ, हजनमें तुक का   
हनिाथि निीों हकया गया। ऐसी कहिता को अतुकाोंत कहिता किा जाता िै। अतुकाोंत कहिता में छ  
ोंद का   
अनुशासन रिता िै।   
ग़ज़र्   
ग़ज़ल की हिर्धा फारसी तर्ा उद  
ूथ भार्ाओों क  
े साहित्य में मुख्य रूप से हिकहसत हुई िै। आजकल हिोंदी तर्ा   
अन्य आर्धुहनक भारतीय भार्ाओों में भी गजलें हलखी जा रिी िैं। ग़ज़ल में दो चरणोों की एक ईकाई िोती िै,   
हजसे ‘शेर’ किते िैं। शेर का एक चरण ‘हमसरा’ किलाता िै। आमतौर पर एक ग़ज़ल में पॉच से ग्यारि तक   
शेर िोते िैं। ग़ज़ल का पिला शेर ‘मतला’ किलाता िैं। िर शेर क  
े द  
ूसरे हमसरे क  
े अोंत में एक या एक से   
अहर्धक शब्द दुिराए जाते िैं, हजन्ेंे  
ों ‘रदीप  
़फ़’ किते िैं। रदीप  
़फ़ क  
े पिले काहफया िोता िै। ‘क़ाह़पफ़या’   
एक जैसी ध्वहन िाला शब्द िै। मतले क  
े दोनोों हमसरोों में रदीफ और काहफया का हनिाथि हकया जाता िैं,   
जबहक बाकी शेरोों में से िर एक क  
े द  
ूसरे हमसरे में रदीप  
़फ़ और का़हपफ़या का हनिाथि िोता िै। ग़्ेाजल का   
अोंहतम शेर ‘मक़ता’ किलाता िै। मक़ते में कहि अपना उपनाम (तख़ल्लुस) देता िै।   
उदािरण-   
इस नदी की धाि में ठ  
िंडी वा आती तो ै   
नाव जजलि ी स ी, र् िोिं से टकिाती तो ै।   
एक हचनगािी क ीिं से ढ  
ूॅ  
 ढ र्ाओ दोस्ताॅ  
ेॅ  
िं,   
इस हदए में तेर् से भीगी हुई बाती तो ै।   
   
दुष्योंत क  
ुमार की इस ग़ज़ल में ‘तो िै’ रदीप  
़फ़ िै और मतले का ‘टकराती’ काह़पफ़या िै, हजसे िर शेर क  
े   
द  
ूसरे हमसरे में बाती, गाती, जाती आहद शब्दोों क  
े द्वारा हमलाया गया िै। हिोंदी में दुष्योंत क  
ुमार,   
शमशेरबिादुर हसोंि, हत्रलोचन, अदम गोोंडिी, शलभ श्ीरामहसोंि आहद कहियोों ने ग़ज़लें हलखी िैं।   
   
गद्य की हवधाए  
िं

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
6   
   
   
गद्य शब्द गद  
् (बोलना) र्धातु से बना िै। जो बोला जाए या किा जाए, िि गद्य िै। पद्य का सस्वर पाठ हकया   
जाता िैे  
ै और यि छ  
ोंद या लय में बॅर्धा रिता िै जबहक गद्य छ  
ोंद में बॅर्धा हुआ निीों िोता। आज क  
े साहित्य में   
गद्य में अनेक हिर्धाए हिकहसत िो गई िैं। इनमें से मुख्य हिर्धाएे  
ॅे  
ों िैं- हनबोंर्ध, किानी, उपन्यास, सोंस्मरण,   
रेखाहचत्र, जीिनी, आिकर्ा, यात्रिृताोंत, ररपोताथज, डायरी, पत्र-साहित्य, साक्षात्कार, फीचर तर्ा आलोचना।   
क ानी   
किानी गद्य का ऐसा प्रकार िै, हजसमें जीिन क  
े हकसी एक प्रसोंग, हकसी एक घटना या मनःक्तिहत का िणथन   
िोता िै। यि िणथन अपने आप में पूणथ िोना चाहिए। किानी एक ऐसा आख्यान िै, जो यर्ार्थ का उद  
्घाटन   
करता िै। आकार में छोटा िोता िै, हजसे एक बार में पढ़ा जा सकता िै और जो पाठक पर एक समक्तित   
प्रभाि डालता िै। आजकल लोंबी किाहेनयॉं भी हलखी जा रिी िैं, हजन पर यि पररभार्ा पूरी तरि लागू निीों   
िोती।   
क ानी क  
े तत्व   
1. कथानक- किानी का कर्ानक हकसी एक प्रसोंग या क  
ुछ प्रसोंगाे  
ेे  
ों पर आर्धाररत िोता िै। उसमें   
जीिन का एक अोंश हदखाया जाता िै। इसमें हकसी एक घटना का हचत्रण िोता िैं अर्िा हकसी   
हिशेर् प्रसोंग में पात्र की मनःक्तिहत का हचत्रण भी िो सकता िै।   
   
2. पात्र या चरित्र-हचत्रण- किानी में पात्रें की सोंख्या बहुत अहर्धक निीों िोती। पात्र दो प्रकार क  
े िोते िैं-   
िगीय पात्र तर्ा हिहशष्ट पात्र। िगीय पात्र हकसी िगथ हिशेर् क  
े प्रहतहनहर्ध िोते िैं- जैसे पूजीपहत िगथ,   
श्हमक िगथ, हनम्न िगथ, उच्च िगथ, अध्यापक िगथ आहद। इनमे अपने-अपने िगथ की हिशेर्ताएे  
ॅ रिती   
िैं। हिहशष्ट पात्र मेे  
ेे  
ों असार्धारण या हनजी हिशेर्ताएे  
ॅे  
ों िोती िैं।   
   
3. सिंवाद- पात्रें की आपसी बातचीत से किानी में रोचकता और आकर्थण उत्पन्न िोता िैं। सोंबादोों क  
े   
माध्यम से इन पात्रें की अपनी-अपनी हिशेर्ताओों को भी पाठक जान सकता िै। किानी में बहुत   
लोंबे-लोंबे सोंिादोों क  
े हलए गुोंजाइश निीों िोती। सोंिाद छोटे परोंतु मन पर छाप छोड़ने िाले िोने   
चाहिए।   
   
4. वाताविण- किानी में हजस प्रकार का कर्ानक िै, उसक  
े अनुरूप िातािरण को हचत्रण िोना   
चाहिए। यि िातािरण सामाहजक, राजनैहतक, ऐहतिाहसक, आहद कई प्रकार का िो सकता िै।   
आर्धुहनक शब्दािली में इसे पररिेश किा जाता िै।   
   
5. भाषा-शैर्ी- किानीकार अपनी रूहच, कर्ानक तर्ा िातािरण क  
े अनुरूप हिहभन्न प्रकार की   
शैहलयोों को किानी में अपनाता िै। रचना हिर्धान की दृहष्ट से मुख्य रूप से किानी में िणथनािक,   
सोंिादािक, आिकर्ािक, पत्र और डायरी आहद शैहलयोों का प्रयोग िोता िैं। लेखक अपनी

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
7   
   
   
रूहच, तर्ा किानी क  
े कर्ानक, देशकाल और िातािरण क  
े अनुसार काव्यािक, अलोंकारप्रर्धान   
या सरल बोलचाल की भार्ा का उपयोग करता िैं।   
   
6. उद्देश्य- किानी का प्रमुख उद्देश् िैं कलािक ढोंग से जीिन की व्याख्या करना। किानीकार हकसी   
घटना या प्रसोंग क  
े हचत्रण द्वारा हकसी हिशेर् भाि या हिचार का सोंप्रेर्ण कर हकसी समस्या की ओर   
पाठक का ध्यान आकहर्थत करता िै और सामाहजक तर्ा नैहतक मूल्योों की िापना करता िै। सार्   
िी किानी और उपन्यास का एक उद्देश् पाठकोों को मनोरोंजन करना भी िै।   
क ानी क  
े प्रकाि   
हिर्य की दृहष्ट से किानी मनोिैज्ञाहनक, ऐहतिाहसक, पाररिाररक, सामाहजक, िैज्ञाहनक आहद कई प्रकार की   
िो सकती िैं। जैनेंद्र क  
ुमार की किाहनयॉं मनौिैज्ञाहनक किाहनयाे  
े क  
े अच्छ  
े उदािरण िैं। प्रसाद की   
‘ममता’ ऐहतिाहसक किानी िैं। प्रेमचोंद की ‘बड़े घर की बेटी’ एक पाररिाररक किानी िै। प्रेमचोंद की िी   
‘कपफ़न’ एक सामाहजक किानी िै।   
उपन्यास   
किानी क  
े समान उपन्यास भी कर्ा-प्रर्धान हिर्धाओों में से एक िै। यि आर्धुहनक हिर्धा िै। यि माना जाता िै   
हक आज क  
े साहित्य में मिाकाव्य का िान उपन्यास ने ले हलया िै। इसहलए इसे ‘मानि जीिन का   
गद्यािक मिाकाव्य’ भी किा जाता िै। यि किानी की अपेक्षा आकार और कर्ानक क  
े प्रसार में हिशाल   
िोता िै। इसमें जीिन का समग्र और यर्ार्थ रूप प्रिुत हकया जाता िै। उपन्यास में समाज, इहतिास, और   
सोंस्क  
ृहत का व्यापक अध्ययन रचनािक रूप ग्रिण करता िै।   
उपन्यास क  
े तत्व   
किानी क  
े समान िी उपन्यास मेे  
ेे  
ों भी हनम्नहलक्तखत तत्व आिश्क िैं- कर्ाििु, पात्र, कर्ोपकर्न, देश-  
काल और िातािरण, शैली तर्ा उद्देश्। उपन्यास में कर्ा का आरोंभ या भूहमका, सोंघर्थ या प्रयास, चरम   
हबोंदु, आरोि तर्ा अिसान या समाक्ति-इन पॉच क्तिहतयोों क  
े द्वारा प्रिुतीकरण हकया जाता िै। किानी क  
े   
पात्रें की तुलना में उपन्यास क  
े पात्र जीिन क  
े हभन्न-हभन्न क्षेत्रें से सोंबोंहर्धत िोते िैं।   
उपन्यास क  
े प्रकाि   
उपन्यास क  
े भेद दो आर्धारोों पर हकया जाता िै-हिर्यििु क  
े आर्धार पर तर्ा हशल्प क  
े आर्धार पर।   
हिर्यििु क  
े आर्धार पर मुख्य रूप से उपन्यास क  
े ये भेद माने जाते िैं- सामाहजक, राजनैहतक, ऐहतिाहसक,   
मनोिैज्ञाहनक, आोंचहलक तर्ा जीिनी-परक। प्रेमचोंद क  
े ‘गबन’ और ‘गोदान’ जैसे उपन्यास सामाहजक   
उपन्यास िैं। यशपाल का ‘र्ूठा सच’, भागितीचरण िमाथ का ‘टेढ़े-मेढ़े रािे’ तर्ा भीष्म सािनी का ‘तमस’   
राजनैहतक उपन्यास क  
े उदािरण किे जा सकते िैं। िृोंदािनलाल िमाथ क  
े ‘र्ॉसी की रानी’ तर्ा ‘मृगनयनी’   
ऐहतिाहसक उपन्यास िैं। इलाचोंद्र जोशी का ‘सोंयासी’ मनौिैज्ञाहनक उपन्यास िैं तो फणीश्वर नार् रेणु का

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
8   
   
   
‘मैला ऑचल’ और ‘परती-पररकर्ा’ आोंचहलक। अमृतलाल नागर का ‘मानस का िॅंस’ और हगररराज हकशोर   
का ‘पिला हगरहमहटया’ जीिनी परक उपन्यास क  
े उदािरण िैं।   
हशल्प क  
े आर्धार पर उपन्यास क  
े प्रमुख भेद िैं- घटना प्रर्धान, चररत्र प्रर्धान, घटना-चररत्र प्रर्धान और   
िातािरण प्रर्धान। देिकीनोंदन खत्री का उपन्यास ‘चोंद्रकाोंता’ घटना प्रर्धान उपन्यास का उदािरण िै।   
इलाचोंद्र जोशी का ‘सोंयासी’ उपन्यास चररत्र प्रर्धान िै और रेणु का ‘मैला ऑचल’ िातािरण प्रर्धान।   
हनबिंध   
‘हनबोंर्ध’ शब्द ‘हन’ उपसगथ क  
े सार् बोंर्ध (बॉर्धना) र्धातु से बना िै। हिचारोों या भािोों को सुसोंबि रूप में   
बॉंर्धकर हजस हिर्धा में प्रकट हकया जाए िि हनबोंर्ध िैे  
े। यि अोंग्रेजी क  
े ‘एस्से’ का पयाथय िै। हनबोंर्ध गद्य का   
ऐसा प्रकार िै, हजसमें लेखक हकसी हिर्य अर्िा ििु क  
े सोंबोंर्ध में अपने हिचारोों या भािोों को एक सीहमत   
आकार में इस प्रकार प्रकट करता िै हक िे पाठक क  
े मन पर प्रभाि या छाप अोंहकत कर सक  
े। हिचारोों और   
िणथन की दृहष्ट से हनबोंर्ध अपने आप में पूणथ िोना चाहिए।   
हनबोंर्ध गद्य रचना का सबसे हिकहसत रूप माना जाता िै। आचायथ रामचोंद्र शुक्ल ने तो हनबोंर्ध को ‘गद्य की   
कसौटी’ किा िै। उनक  
े अनुसार भार्ा की पूणथ शक्तक्त का हिकास हनबोंर्धोों मे िी सबसे अहर्धक सोंभि िै।   
हनबोंर्ध क  
े प्रकार: हनबोंर्ध मुख्य रूप से दो प्रकार क  
े िोते िैं- हिर्य प्रर्धान और हिर्यी प्रर्धान। हिर्य प्रर्धान   
हनबोंर्धोों मेे  
ेे  
ों हिचार या हचोंतन की प्रमुखता रिती िै, जबहक हिर्यी प्रर्धान हनबोंर्धोों में लेखक की व्यक्तक्तगत   
भािनाओों की। हिन्दी में पॉच प्रकार क  
े हनबोंर्ध हलखे गए िैं- िणथनािक, हििरणािक, हिचारािक,   
भािािक तर्ा लहलत हनबोंर्ध।   
1. वणलनात्मक हनबिंध- िणथनात्म्क हनबोंर्ध में हनबोंर्धकार हकसी बाह्य दृश् का िणथन करता िै परोंतु िणथन में   
तटिता रिती िै। भारतेन्दु क  
े प्रक  
ृहत सोंबोंर्धी हनबोंर्ध िणथनािक हनबोंर्ध िैं।   
2. हवविणात्मक हनबिंध- हििरणािक हनबोंर्ध में हनबोंर्धकार हकसी घटना का हििरण प्रिुत करता िै। यि   
हििरण क्रमबि तर्ा सुसोंगत िोना चाहिए।   
3. हवचािात्मक हनबिंध- हिचारािक हनबोंर्ध में बुक्तितत्व की प्रर्धानता रिती िै। हनबोंर्धकार हिर्य का   
तक  
थसोंगत प्रहतपादन करता िै। इस प्रकार क  
े हनबोंर्धोों का उद्देश् िोता िै पाठक की सोचने-समर्ने की   
क्षमता को जगाना और बढ़ाना। आचायथ रामचोंद्र शुक्ल ने इस कोहट क  
े हनबोंर्धोों की हिशेर्ता बताते हुए किा   
िै-‘‘शुि हिचारािक हनबोंर्धोों का परम उत्कर्थ ििी किा जा सकता िै, जिॉं एक-एक पैराग्राफ मे हिचार   
दबा-दबा कर कसे गए िोों और एक-एक िाक् हकसी सोंबोंर्ध खोंड क  
े हलए िाे  
ेे  
ों।’’ आचायथ शुक्ल क  
े काव्य में   
लोकमोंगल की सार्धनाििा, क्र  
्रर्ररोर्ध, करूणा आहद हनबोंर्ध हिचारािक हनबोंर्धोों क  
े श्ेष्ठ उदािरण िैं।   
4. भावात्मक हनबिंध- भािािक हनबोंर्ध में भािना की प्रर्धानता िोती िै। इनका उद्देश् पाठक क  
े हचत्त में   
भाि तर्ा रस का सोंचार करना िोता िै। सरदार पूणथहसोंि क  
े मजद  
ूरी और प्रेम, आचरण की सभ्यता, सच्ची   
िीरता, कन्यादान तर्ा पहित्रता आहद हनबोंर्ध भािािक हनबोंर्धोों क  
े उदािरण िैं।

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
9   
   
   
5. र्हर्त हनबिंध- लहलत का अर्थ िोता िैं सुोंदर। िािि में लहलत हनबोंर्ध में हनबोंर्धकार क  
े ऊपर बताए गए   
चारोों प्रकार की हिशेर्ताओों को अपने व्यक्तक्तत्व, हचोंतन, सोंिेदनशीलता तर्ा अनुभूहत क  
े द्वारा इस तरि   
समक्तित कर देता िै हक पाठक किानी, नाटक और कहिता का एक सार् रसास्वादन करने लगता िै।   
हनबोंर्धकार क  
े अपने व्यक्तक्तत्व या उसकी िैयक्तक्तकता की इन हनबोंर्धोों पर सुस्पष्ट छाप िोती िै। स्वछ  
ोंदता,   
कल्पना और लोक जीिन से लगाि लहलत हनबोंर्ध की हिशेर्ताएे  
ॅे  
ों िैं। िजारीप्रसाद हद्विेदी क  
े अशोक क  
े   
फ  
ूल और आम हफर बौरा गए, हिद्याहनिास हमश् का मेरे राम का मुक  
ुट भीग रिा िै तर्ा क  
ुबेरनार् राय का   
रस-आखेटक आहद लहलत हनबोंर्ध क  
े उदािरण िैं।   
हनबिंध की शैहर्यॉ   
हनबोंर्ध की रचना अनेक शैहलयोों मे िोती िैं। इन शैहलयोों का हिभाजन दो िगो मे हकया जा सकता िै- बोंर्ध की   
दृहष्ट से तर्ा स्वरूप की दृहष्ट से। बोंर्ध की दृहष्ट से मुख्य रूप से हनबोंर्धोों में हनम्नहलक्तखत शैहलयोों का प्रयोग िोता   
िै-   
1. व्यास शैर्ी- व्यास का अर्थ हििार िै। व्यास शैली मे हिर्य को अलग-अलग कोहटयोों में हिभाहजत   
करक  
े हििार से समर्ाया जाता िै। िणथनािक या हििरणािक हनबोंर्धोों क  
े हलए शैली अनुक  
ूल िोती िै।   
कभी-कभी भािािक हनबोंर्धोों में भी लेखक इसका आश्य लेता िै। मिािीर प्रसाद हद्विेदी क  
े हजन   
हििरणािक हनबोंर्धोों को ऊपर उदािरण हदया गया िै उनमें इस शैली का प्रयोग हुआ िै। आचायथ िजारी   
प्रसाद हद्विेदी क  
े हशरीर् क  
े फ  
ूल को भी इस शैली का उदािरण किा जा सकता िै।   
2. समास शैर्ी- व्यास शैली क  
े हिपरीत समास शैली िोती िै। समास का अर्थ िैं सोंक्षेप। समास शैली में   
हििार या फ  
ैलाि क  
े िान पर कसाि िोता िै। हनबोंर्धकार नपे-तुले शब्दोों में हििृत हिर्य को सोंक्षेप में   
प्रिुत कर देता िै। इस प्रकार गागर में सागर भरने का मुिािरा समास शैली क  
े हनबोंर्धोों पर लागू िोता िै।   
3. धािा शैर्ी- र्धारा शैली में भािोों का प्रिाि पानी की र्धारा क  
े समान आगे बढ़ता िै। अहभव्यक्तक्त हबना   
रूकािट क  
े सिज रूप से िोती िै। हनबोंर्धकार इतना भािाक  
ुल रिता िै हक हनरोंतर भाि उसक  
े मानस से   
व्यक्त िोते जाते िैं और उनक  
े अनुरूप भार्ा स्वयों बनती चली जाती िैं। सरदार पूणथहसोंि मजद  
ूरी और प्रेम,   
आचरण की सभ्यता, सच्ची िीरता, कन्यादान तर्ा पहित्रता आहद हनबोंर्ध र्धारा शैली क  
े उदािरण िैं।   
4. तििंग शैर्ी- तरोंग शैली मेे  
ेे  
ों भाािोे  
ेे  
ों की गहत र्धारा शैली क  
े समान हनबाथर्ध या हबना रूकािट क  
े निीों   
िोती। भािाे  
ेे  
ों का प्रकाशन पानी की लिरोों क  
े समान िोता िैं, जो ऊपर उठती िै, हफर नीचे आती िैं और   
अटक-अटक कर आगे बढती िैं।   
5. हविेप शैर्ी- र्धारा शैली क  
े हिपरीत शैली में भािाे  
ेे  
ों की अहभव्यक्तक्त अहनयहमत िो जाती िै। भािोों क  
े   
प्रकट िोने में अिरोर्ध को अनुभि िोता िै। जहटल मनःक्तिहतयोों को प्रकट करने क  
े हलए हनबोंर्धकार इस   
शैली का आश्य लेते िैं। बाबू बालमुक  
ुोंद गुि ने ‘हशिशोंभू क  
े हचट्ठे’ शीर्थक से कई हनबोंर्ध हलखे िेे  
ैे  
ों।   
आर्ोचना

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
10   
   
   
आलोचना का अर्थ िै हक हकसी भी साहिक्तत्यक रचना को अच्छी तरि देखना या परखना तर्ा परखकर   
उसक  
े गुण-दोर्ोों का हनणथय करना। आलोचना को समालोचना भी किते िैं। ‘समीक्षा’ शब्द भी इसक  
े हलए   
प्रयोग मेे  
ेे  
ों लाया जाता िै।   
आलोचना एक हिचार-प्रर्धान गद्य हिद्या िै। जब साहित्य या साहित्यकार का इस प्रकार हििेचन हकया जाता   
िै हक पाठक उस रचना क  
े हिहभन्न पक्षोों से पररहचत िो सक  
ें, उसक  
े गुण-दोर्ोों को समर् सक  
ें तर्ा   
रचनाकार की दृहष्ट को भी जान सक  
ें तो यि आलोचना या समालोचना किलाएगी। साहित्य की आलोचना   
हलखने िाले या आलोचना करने िाले ममशथ व्यक्तक्त को आलोचक, समालोचक या समीक्षक किा जाता िै।े  
ों   
ड  
राइडन क  
े अनुसार- ‘‘आलोचना ऐसी कसौटी िै, हजसकी सिायता से हकसी क  
ृहत का मूल्याोंकन हकया जाता   
िैं।’’ यहद िम साहित्य को जीिन की व्याख्या मानें तो आलोचना को उस व्याख्या की व्याख्या मानना पड़ेगा।   
आर्ोचना क  
े प्रकाि: आलोचना में हकसी रचना क  
े बारे में आलोचक अपना हनणथय दे सकता िैे  
े। िि यि   
बता सकता िैं हक िि रचना अच्छी िैं या उसमें कहमयॉं िेे  
ैे  
ों। आलोचक यि भी कर सकता िैं हक िि   
रचना को अच्छी या बुरी न किें, िि रचना की क  
ेिल व्याख्या प्रिुत कर दे हजससे आलोचना का पाठक   
रचना क  
े गुण-दोर् को स्वयों समर् सक  
े। इस प्रकार आलोचना दो प्रकार की िो जाती िैं- हनणथयािक तर्ा   
व्याख्यािक।   
आलोचना में समालोचक व्यक्तक्तगत राय क  
े आर्धार पर हकसी रचना का हिश्लेर्ण निीों करता, न व्यक्तक्तगत   
राय क  
े कारण िि उसे अच्छी या बुरी बताता िैं। आलोचना में रचना को समर्ने और उसका हिश्लेर्ण   
करने क  
े हलए िैज्ञाहनक और ताहक  
थक पिहत अपनाई जाती िैं। पिहत क  
े आर्धार पर आलोचना क  
े कई   
प्रकार िो सकते िैं- प्रभािादी आलोचना, हनणथयािक आलोचना, व्याख्यािक आलोचना, तुलनािक   
आलोचना आहद।   
नाटक अथवा रूपक   
दृश् काव्य या दृश् साहित्य का िी द  
ूसरा नाम रूपक िैं। हजसका रूप मोंच पर प्रदहशथत हकया जा सक  
े,   
साहित्य की ऐसी हिद्या रूपक िैं। इसका मोंच पर अहभनय(अहभनय) हकया जाता िैं, इसहलए इसको नाटक   
भी किते िैं।   
नाटक क  
े तत्व   
भारतीय परोंपरा क  
े अनुसार नाटक(रूपक) क  
े हनम्नहलक्तखत तत्व हगनाए गए िैं-   
1. कथावस्तु- कर्ाििु या किानी। इसे इहतिृत्त भी किते िैं। कर्ाििु दो प्रकार की िोती िै- मुख्य   
और प्रासोंहगक। रामायण की किानी पर नाटक हलखा जाए तो उसमें राम का िनिास, सीतािरण,   
रािणिर्ध इस प्रकार क  
े कर्ा किलाएे  
ॅे  
ोंगें। इनक  
े सार् मोंर्रा और क  
ैक  
ेयी का सोंिाद, जटायु का   
िर्ध- इस प्रकार क  
े प्रसोंग प्रासोंहगक कर्ा क  
े अोंग िोोंगे।

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
11   
   
   
2. पात्र- नाटक क  
े नायक, नाहयका तर्ा अन्य सभी चररत्र पात्र किे जाते िैं।   
   
3. िस- नाटक से प्राि िोने िाली सौोंदयाथिक अनुभूहत रस िैं।   
   
4. अहभनेयता- नाटक रोंगमोंच पर खेलने क  
े हलए िोता िैं। अहभनेता अपनी िाणी, शरीररक चेष्टाआे  
ेे  
ों,   
िेश-भूर्ा आहद क  
े द्वारा उसे प्रिुत करता िैं। यि प्रिुहत नाटक को अहभनय िैं। प्रत्येक नाटक में   
अहभनेयता िोनी चाहिए।   
   
5. सिंगीत, गीत तथा नृत्य- नाटक की प्रिुहत में अहभनय क  
े सार् आिश्कतानुसार इन तत्वोों का   
प्रयोग हकया जाता िैं।   
कथावस्तु या कथानक- नाटक का कर्ानक ऐहतिाहसक, पौराहणक, र्धाहमथक, सामाहजक या काल्पहनक िो   
सकता िैं। भारतीय नाट्य हचोंतन में कर्ाििु क  
े हिकास की पॉंच अििाएे  
ॅे  
ों मानी गई िैं- प्रारोंभ, यत्न,   
प्रत्याशा, हनयताक्ति, फलागम। आर्धुहनक काल में सामान्य तौर पर कर्ानक क  
े हिकास की चार क्तिहतयॉं-  
आरोंभ, हिकास, सोंघर्थ, तर्ा चरम सीमा- स्वीकार की गई िैं। परोंतु आजकल क  
े नाटकोों में कर्ानक क  
े   
हिकास का यि क्रम ट  
ूट रिा िैं।   
चरित्र-हचत्रण- नाटक में नायक, प्रहतनायक, नाहयका, आहद पात्र िोते िैं। हबना पात्र क  
े कोई नाटक सोंभि   
निीों िैं।   
सिंवाद या कथोपकथन- हजस प्रकार नाटक हबना पात्रें या चररत्रें क  
े निीों िो सकता उसी प्रकार इन पात्रें में   
परस्पर सोंिाद या बातचीत क  
े हबना भी नाटक सोंभि निीे  
ेे  
ों िैं।सोंिाद दो प्रकार क  
े िोते िैं- स्वगत तर्ा   
प्रकट। स्वगत कर्न का आशय िैं कोई पात्र अपने मन में जो क  
ुछ सोचता िैं, उसे पात्र क  
े मुे  
ॅि से   
किलिाना। मोंचन क  
े समय यि मान हलया जाता िैं हक हकसी भी पात्र क  
े स्वगत कर्न को नाटक का कोई   
द  
ूसरा पात्र निीों सुन रिा िैं, क  
ेिल दशथक उसे सुन रिे िैं। प्रकट कर्न मोंच पर खड़े हकसी द  
ूसरे पात्र को या   
कई पात्रें को सोंबोहर्धत िोता िैं और इसे सोंबोहर्धत पात्र या पात्रें क  
े अलािा द  
ूसरे पात्र भी सुन सकते िै।   
देश-कार् औि वाताविण- हजस प्रकार की कर्ाििु नाटक में ली गई िैं, उसक  
े अनुसार देश-काल तर्ा   
िातािरण का हचत्रण नाटककार को करना चाहिए। यि पात्रें क  
े रिन-सिन, िेश-भूर्ा और रीहत-ररिाज   
आहद क  
े द्वारा सोंभि िैं।   
भाषा-शैर्ी- नाटक क  
े सोंिाद हकसी न हकसी भार्ा में िी िोते िैं। नाटक की भार्ा पात्र, कर्ा तर्ा देश-  
काल और िातािरण क  
े अनुरूप िोती िैं।   
उद्देश्य- नाटक एक ऐसी हिर्धा िैं, हजसका प्रदशथन कई लोग एक सार् देखते िैं। इसहलए आिश्क िो जाता   
िैं हक नाटक समाज क  
े हलए हकसी प्रयोजन की पूहतथ करें। प्रत्येक नाटक में नाटककार दशथकोों को क  
ुछ   
सोंदेश देना चािता िैं या नाटक क  
े माध्यम से उनका ध्यान हकसी समस्या की ओर आक  
ृष्ट करना चािता िैं।

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
12   
   
   
ििंगहनदेश- अहभनेताओों क  
े हलए नाटक की प्रिुहत क  
े समय कब क्ा करना िैं, इस प्रकार क  
े हनदेश   
रोंगहनदेश किे जाते िैे  
ेे  
ों।   
ग्रीक परोंपरा में नाटक क  
े हनम्नहलक्तखत तत्व माने गए िैं- कर्ाििु, पात्र, कर्ोपकर्न (सोंिाद), देश-काल,   
उद्देश् तर्ा शैली। ग्रीक परोंपरा में नाटक में तीन प्रकार की अक्तिहेहत(एकता) भी जरूरी मानी गई िै- देश   
या िान की अक्तिहत, काल या समय की अक्तिहत तर्ा कायथ या घटनाओों की अक्तिहत। इसे सोंकलन-त्रय भी   
किा जाता िैं।   
नाटकोों का हिभाजन अोंकोों तर्ा दृश्ोों में हकया जाता िैं। अोंकोों की सोंख्या की दृहष्ट से नाटक दो प्रकार क  
े   
िोते िैं- एकाोंकी नाटक तर्ा अनेकाोंकी नाटक। अनेकाोंकी नाटक को पूणाथकार नाटक भी किते िैं। इसमें   
कम से कम दो अोंक िोते िैं। पूणाथकार नाटक को क  
ेिल नाटक भी किा जाता िैं। इसका हिभाजन कई   
अोंकोों मे िोता िैं। एक अोंक क  
े भीतर कई दृश् रि सकते िैं। एकाोंकी नाटक में एक िी अोंक िोता िैं, हजसमें   
एक या अनेक दृश् िो सकते िैं।   
एकािंकी नाटक- पुराने नाटकोों में प्रिसन, भाण आहद रूपक एक अोंक क  
े िोते र्े। आर्धुहनक भार्ाओों में   
एकाोंकी नाटक, नाटक की एक स्वतोंत्र हिर्धा मानी जाती िैं। एकाोंकी नाटक में क  
ेिल एक अोंक िोता िैं। इस   
एक अोंक को कई दृश्ोों मे हिभाहजत हकया जा सकता िैं। एकाोंकी नाटक में जीिन की कोई एक घटना,   
एक पररक्तिहत, एक समस्या या कोई एक प्रसोंग प्रिुत हकया जाता िैं। ऊपर तीन प्रकार की अक्तिहत   
(एकता) बताई गई िैं। एकाोंकी नाटक में सामान्यतया ये तीनोों प्रकार की अक्तिहतयॉं िोती िैं।   
एकाोंकी तर्ा नाटक में अोंतर- जो अोंतर किानी और उपन्यास में िैं, या जो अोंतर मिाकाव्य और खोंडकाव्य   
में िैं, ििी अोंतर एकाोंकी तर्ा नाटक में समर्ना चाहिए। नाटक की तुलना में एकाोंकी में पात्रें की सोंख्या कम   
िोती िैं। इसमें घटनाओों या पूिी पर प्रसोंगोों की भी हिहिर्धता इतनी निीों िोती हजतनी नाटक मेे  
ेे  
ों। एकाोंकी   
में हकसी घटना या प्रसोंग की िी माहमथक प्रिुहत करक  
े समग्र प्रभाि उत्पन्न हकया जाता िैं।   
गीहत नाट्य-गीहत नाट्य क  
े समान िी काव्य नाटक में सारे सोंिाद पद्य में या कहिता में रिते िैं। र्धमथिीन   
भारती को अोंर्धायुग, नरेश मेिता का सोंशय की एक रात, दुष्योंत क  
ुमार का एक क  
ोंठ हिर्पायी, भारतभूर्ण   
अग्रिाल का अहिलोक आहद इसक  
े उदािरण िैं।   
िेहडयो रूपक- रेहडयो रूपक नाटक की नई हिर्धा िैं। इसमें दृश् तत्व निीों िोता। सोंिादोों क  
े सार् हिहभन्न   
प्रकार की पाश्वथ ध्वहनयोों की प्रिुहत की जाती िैं हक श्ोता दृश् की कल्पना कर सक  
ें। इसे ध्वहनरूपक भी   
किते िैं। सुहमत्रनोंदन पोंत का रजतहशखर, भगितीचरण िमाथ का तारा आहद इसक  
े उदािरण िैं। हचोंरजीत   
क  
े रेहडयोों नाटक भी लोकहप्रय रिे िैे  
ेे  
ों।   
नृत्य-सिंगीत-काव्य रूपक- नृत्य-सोंगीत-काव्य-रूपक या बैले में सारे सोंिाद परदे क  
े पीछ  
े से प्रिुत हकए   
जाते िैं। ये सोंिाद कहिता या गीतोों में िोते िैं। जयशोंकर प्रसाद की कामायनी तर्ा इस प्रकार क  
े अन्य   
मिाकाव्योों और खोंडकाव्योों को बैलोों क  
े रूप में प्रिुत हकया जाता रिा िैं।

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
13   
   
   
सिंस्मिण   
सोंस्मरण का अर्थ िैं सम्यक  
् (भलीभॉहत) स्मरण (याद करना)। हकसी स्मरणीय व्यक्तक्त या घटना की यादोों   
को लेकर हकया गया सोंस्मरण क  
े हलए लेखक का स्मरणीय व्यक्तक्त क  
े सार् व्यक्तक्तगत सोंबोंर्ध िोना आिश्क   
िै। यि आिपरक हुआ करता िै। लेखक उत्तम पुरूर् (मैं, िम) का प्रयोग करता हुआ व्यक्तक्त या घटना   
का िणथन करता िै। राहुल साोंक  
ृत्यायन का शाोंहत हनक  
ेतन में सोंस्मरण का अच्छा उदािरण िैं। मिादेिी िमाथ   
ने ‘पर् क  
े सार्ी’ शीर्थक पुिक में अपने समय क  
े साहित्यकारोों पर माहमथक सोंस्मरण हलखेे  
े िैं। रामिृक्ष   
बेनापुरी, बनारसीदास चतुिेदी क  
े सोंस्मरण भी प्रहसि िैे  
ेे  
ोंे  
ों।   
िेखाहचत्र   
रेखाहचत्र मूल रूप से हचत्रकला का शब्द िै। रेखाओों क  
े द्वारा बना हुआ रेखाहचत्र िै। हचत्र में रेखाएे  
ॅे  
ों जो   
काम करती िैं, ििीों काम साहित्य में शब्द करते िैं। जब लेखक शब्दोे  
ेे  
ों क  
े द्वारा हकसी व्यक्तक्त, ििु या   
दृश् का इस प्रकार िणथन करता िैं हक ऑखोों क  
े आगे उस व्यक्तक्त, ििु या दृश् का हचत्र क्तखोंचता चला   
जाए, तो इसे रेखाहचत्र किते िैं। इसका द  
ूसरा नाम शब्दाहचत्र भी िैे  
ैे  
ों। रेखाहचत्र की हिशेर्ता यि िोती िैं   
हक इसमें साहित्यकार अपनी कल्पना या अनुभूहत का अलग से कोई रोंग निीों भरता, हजस व्यक्तक्त, ििु या   
दृश् का िणथन करना िैं, उसका हू-ब-हू हचत्र अोंहकत कर देता िै। सोंस्मरण और रेखाहचत्र दोनाे  
ेे  
ों में िी   
िर्ण्थ हिर्य काल्पहनक न िोकर यर्ार्थ िोता िै। पर सोंस्मरण में आिपरकता अहर्धक िोती िै और रेखाहचत्र   
में कम।   
   
जीवनी   
जीिनी में लेखक हकसी व्यक्तक्त का जीिन चररत प्रिुत करता िै। इसमें प्रायः उस व्यक्तक्त की जन्म से लेकर   
मृत्यु तक की सभी घटनाएे  
ॅ िोती िै। इसमें व्यक्तक्त क  
े व्यक्तक्तत्व, क  
ृहतत्व तर्ा उसकी उपलक्तियोों का िणथन   
रिता िै। सोंस्मरण तर्ा रेखाहचत्र क  
े समान इसका हिर्य भी काल्पहनक न िोकर यर्ार्थ हुआ करता िै।   
जीिनी न इहतिास िै और न उपन्यास। पर इन दोनोों हिर्धाओों की हिशेर्ताएे  
ॅे  
ों इसमें समाहित िो जाती िैं।   
हिोंदी में हलखी गई जीिहनयोों क  
े क  
ुछ श्ेष्ठ उदािरण िैं-अमृतराय द्वारा हलक्तखत प्रेमचोंद की जीिनी ‘कलम का   
हसपािी’, रामहिलास शमाथ रहचत मिाकहि हनराला की जीिनी ‘हनराला की साहित्य-सार्धना’ और हिष्णु   
प्रभाकर क  
ृत बॅंगला क  
े प्रहसि साहित्यकार शरतचोंद्र की जीिनी ‘आिादा हसपािी’ आहद।   
   
आत्मकथा

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
14   
   
   
जीिनी का एक रूप आिकर्ा िै। लेखक उत्तम पुरूर् का प्रयोग करते हुए अपनी जीिनी हलखता िै तो   
ििी आिकर्ा बन जाती िै। हिन्दी में हलखी गई क  
ुछ आिकर्ाओों क  
े उदािरण िैं- डॉ- राजेंद्रप्रसाद की   
आिकर्ा, राहुल साोंक  
ृत्यायन की मेरी जीिन-यात्र, यशपाल का हसोंिािलोकन, िररिोंशराय बच्चन की ‘क्ा   
भूलॅू, क्ा याद करूे  
ॅ’, ‘नीड़ का हनमाथण हफर’, ‘बसेरे से द  
ूर’ और ‘दस द्वार से सोपान तक’ शीर्थक से चार   
खोंडोों में प्रकाहशत आिकर्ा।   
यात्र-वृतािंत   
यात्र-िृताोंत सोंस्मरण और रेखाहचत्र से हमलती-जुलती हिर्धा िै। इसमें लेखक अपनी हकसी यात्र का रोचक   
िणथन करता िै, हजससे हजस िान की यात्र की गई िै, उसको ऐहतिाहसक, भौगौहलक तर्ा साोंस्क  
ृहतक   
हिशेर्ताओों से पाठक पररहचत िोते िैं। यात्रिृताोंत क  
े उदािरण क  
े रूप में हनम्नहलक्तखत पुिकोों क  
े नाम   
हगनाए जा सकते िैं- राहुल साोंक  
ृत्यायन की ‘मेरी यूरोप यात्र’, ‘मेरी हतब्बत यात्र’, तर्ा अज्ञेय की ‘अरे!   
यायािर रिेगा याद’े  
ों।   
   
रिपोतालज   
ररपोताथज एक निीन हिर्धा िै। ररपोताथज मूलरूप से फ्र  
ैंच भार्ा शब्द िै। िाल में िी घटी तर्ा लेखक क  
े द्वारा   
प्रत्यक्ष देखी गई घटनाओों का अोंतरोंग अनुभि क  
े सार् हकया गया िणथन ररपोताथज िै। अोंग्रेजी में इसी से   
हमलता-जुलता शब्द ररपोट िै, पर ररपोट सूचनािक िोती िै। ररपोताथज में हकसी घटना का िणथन लेखक क  
े   
व्यक्तक्तत्व क  
े स्पशथ से आकर्थक बन जाता िैं। हिोंदी क  
े क  
ुछ उल्लेखनीय ररपोताथज िैं- फणीश्वरनार् रेणु का   
‘ट्टण जल र्धन जल’, र्धमथिीर भारती का ‘ब्रिमपुत्र क  
े मोचे पर’ आहद।   
डायिी-र्ेखन   
डायरी को रोजनामचा, दैहनकी या दैनोंहदनी भी किा जाता िै। कोई लेखक प्रहतहदन घटी हुई घटनाओों,   
अनुभिोों और प्रहतहक्रयाओों को अपनी नोटबुक में अोंहकत करता िै तो उसमें डायरी बनती िै। इसमें   
सोंस्मरण, हनबोंर्ध, यात्रिृताोंत आहद अनेक हिर्धाओों की हिशेर्ताएे  
ॅ घुलहमल जाती िैं। लेखक की व्यक्तक्तगत   
अनुभूहतयोों या हिचारोों की छाप इसमें सदैि बनी रिती िै। मोिन राक  
ेश, शमशेरबिादुर हसोंि, हत्रलोचन   
आहद अनेक साहित्यकारोे  
ेे  
ों ने डायररयोों हलखी िैं, जो पुिकाकार प्रकाहशत िैं।   
पत्र-साह त्य   
पत्र एक व्यक्तक्त क  
े द्वारा द  
ूसरे व्यक्तक्त को हलखें जाते िेे  
ैे  
ों। इसमें लेखक अपने मन की बात खोलकर किता   
िैं। कभी-कभी ऐसे पत्र साहिक्तत्यक दृहष्ट से मूल्यिान तर्ा समाज क  
े हलए एक र्धरोिर बन जाते िैं। क  
ेदारनार्   
अग्रिाल तर्ा रामहिलास शमाथ ने एक द  
ूसरे को जो पत्र हलखें र्े, िे हमत्र-सोंिाद पुिक में प्रकाहशत िै।   
नेहमचोंद जैन और मुक्तक्तबोर्ध क  
े बीच हुआ पत्र-व्यििार ‘पाया पत्र तुम्हारा’ शीर्थक पुिक में सामने आया िै।

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
15   
   
   
सािात्काि   
साक्षात्कार भी एक आर्धुहनक गद्य हिद्या िै। इसे भेंटिाताथ भी किते िै। अोंग्रेजी में इसक  
े हलए इोंटरव्यू शब्द   
का प्रयोग िोता िैं। यि हिद्या मूल रूप से पत्रकाररता की देन िैं। पर साहित्य में इसने अब िान बना हलया   
िैं। हकसी हिहशष्ट व्यक्तक्त से जीिन, कला, साहित्य, सोंस्क  
ृहत या उसकी अपनी रचनाओों अर्िा कायो पर   
बातचीत साक्षात्कार िै।   
फ़ीचि   
पफ़ीचर अोंग्रेजी का शब्द िै। इसक  
े अर्थ िै- रूपक, मुखाक  
ृहत, नाट्यरूपक तर्ा आक  
ृहत। पफ़ीचर का   
उपयोग साहित्य, पत्रकाररता, रेहडयो, तर्ा हसनेमा मे िोता िैं। यि आर्धुहनक गद्य हिर्धा िै। इसमें हकसी   
घटना या दृश् का मनोरोंजक िणथन हकया जाता िैं और ये घटनाएे  
ॅे  
ों और दृश् किानी क  
े प्रसोंगोों की तरि   
पाठक क  
े हचत्त में र्लक उठते िै। पफ़ीचन सच्ची घटना पर आर्धाररत िोते िैं।   
   
शब्द-शक्तक्त हववेचन   
‘शब्द’ भार्ा में इिेमाल िोने िाली सबसे छोटी सार्थक इकाई िै। शब्द या शब्द समूि में जो अर्थ हछपा   
रिता िै उसे प्रकट करने िाली शक्तक्त िी ‘शब्द-शक्तक्त’ िै। ये तीन प्रकार की िोती िै-   
1. अहभधा: हकसी शब्द क  
े मुख्य अर्थ (हनहित अर्थ) से हजस शक्तक्त से बोर्धा िोता िै उसे अहभद्या   
शक्तक्त किते िैं। अहभद्या हजस अर्थ को बताती िै, िि िाच्य अर्थ अहभद्येय अर्थ किलाता िै। जैसे-   
व तोड़ती पत्थि   
देखा उसे मैनें इर्ा ाबाद क  
े पथ पि   
2. र्िणा: मुख्य अर्थ क  
े बाहर्धत िोने पर रूहढ़ अर्िा प्रयोजन क  
े कारण हजस हक्रया या शक्तक्त से   
मुख्य अर्थ से सम्बन्धा रखने िाला अन्य अर्थ लहक्षत िो, उसे लक्षणा शक्तक्त किते िैं। लक्षणा क  
े तीन हनयम   
िैंः-   
• इसमें मुख्य अर्थ या अहभर्धेय अर्थ लागू निीों िोता।   
• मुख्य अर्थ क  
े बाहर्धात िोने पर द  
ूसरा अर्थ हलया जाता िै, परन्तु यि द  
ूसरा अर्थ अहनिायथ   
रूप से मुख्य अर्थ से सोंबोंहर्धात िोता िै।   
• मुख्य अर्थ क  
े िान पर द  
ूसरे अर्थ को अपनाने क  
े पीछ  
े या तो कोई रूहढ़ िोती िै या   
प्रयोजन। जैसे-िि तो पूरा बैल िैं।   
यिााँ स्पष्ट िैं हक मनुष्य बैल निी िो सकता परोंतु द  
ूसरा अर्थ लेने पर हिहदत िोता िै हक बैल शब्द का   
प्रयोजन मूखथ से िैं।

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
16   
   
   
3. व्यिंजना: कहिता का ऐसा गूढ़ अर्थ जो अहभद्या या लक्ष्मण से न जाना जा सक  
े, अर्िा हजस शब्द   
शक्तक्त द्वारा व्योंग्यर्थ का बोर्धा िोता िै उसे व्योंजना शक्तक्त किते िैं। व्योंजना क  
े कारण साहित्य में   
सौन्दयथ तर्ा भािोों में गिनता आती िै। जैसे-जो बच्चा रोज 10 बजे स्क  
ूल जाता िो, िि दस बजे से   
र्ोड़ा पिले यहद अपनी मााँ से किे हक ‘दस बजने िाले िैं’ तो व्योंजना से इस िाक् का अर्थ िोगा-मेरे   
स्क  
ूल जाने का समय िो गया िै।   
हबिंब   
हिोंदी में हबोंब शब्द का प्रयोग, अोंग्रेजी क  
े ‘इमेज क  
े पयाथयिाची क  
े रूप में िोता िै। िमारे शरीर में स्रोत   
(कान), त्वक (त्वचा), चक्षु (ऑख), हजह्वा (जीभ) तर्ा नाहसका ये पााँच ज्ञानेक्तियााँ िैं। पाोंचोों ज्ञानेक्तियोों क  
े   
आर्धाार पर हबोंब क  
े श्व्य, स्पृ"य, दृ"य, स्वाद्य और घ्राण-ये पााँच प्रकार िै। जब साहित्यकार अपनी रचना में   
ििुओों क  
े अनुभि को इस प्रकार मूतथ करता िै हक िि िमें अपनी ज्ञानेक्तन्दयोों क  
े अनुभि क  
े समान प्रतीत   
िोने लगे तो यि हबम्ब किलाता िै। साहित्य में हबोंब हकसी भी मूतथ या अमूतथ पदार्थ का मानहसक हच= िै। इसे   
भािगहभथत शब्द हचत्र भी किा गया िै। जैसे-   
   
हसन्धु सेज पि धािा वधू अब   
तहनक सिंक  
ुहचत बैठी-सी   
प्रर्य हनशा की र्चर् स्मृहत में   
मान हकए-सी ऐिंठी सी   
(उपयुथक्त छ  
ोंद में सेज, िर्धू, हनशा, आहद हबोंब िैं।)   
   
प्रतीक   
प्रतीक का शाक्तब्दक अर्थ िै-अियि अोंग, पता हचह्न, हनशान, हकसी पद्य अर्िा गद्य क  
े आहद या अोंहत क  
े क  
ुछ   
शब्द हलखकर या पढ़कर उस पूर िाक् का पता लगाना, अर्िा एक ििु की पिचान क  
े हलए िम द  
ूसरी   
ििु का प्रयोग करते िैं और यि द  
ूसरी ििु पिली ििु को बताने क  
े हलए सिथ स्वीक  
ृत िोती जाती िै, तो   
िि पिली ििु का प्रतीक बन जाती िै। जैसे-   
ऐ नभ की दीपावहर्योिं   
तुम िण पि भि को बुर् जाना   
मेिे हप्रयतम को माना ै   
तम क  
े पदे में आना   
यिॉं नक्षत्रों को जीिोंत मान कर अनुरोर्ध हकया गया िै।

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
17   
   
   
छिंद हववेचन   
मात्रओों या िणों की रचना, गहत तर्ा यहत (हिराम) का हनयम और चरणाोंत में समता हजस कहिता में पाई   
जाय उसे छ  
ोंद किते िैं। परोंतु चरणातों में समता को अहर्धाक मित्व निीों हदया जाता।   
छिंद क  
े तत्व   
• यहत- यहत का अर्थ रूकना। प्रत्येक छ  
ोंद में क  
ुछ हनर्धााथररत िलोों पर पढ़ते समय रूकना िोता िै   
हजससे छ  
ोंद का प्रिाि या लय बनी रिे।   
• गहत- जिााँ यहत निी िोती ििााँ हबना रूक  
े छ  
ोंद का पाठ करना िी गीत िै।   
• लय- गीत ि युहत को समुहचत प्रयोग से लय उत्पन्न िोती िै।   
मात्र हकसी भी िणथ क  
े उच्चारण में लगने िाला समय मात्र िै। ह्नस्व िणथ में एक ि दीघथ में दो मात्र िोती िै।   
दोिा, चौपाई, सोरठा, िररगीहतका आहद छ  
ोंद क  
े रूप िै।   
अर्िंकाि हनरूपण   
दण्डी ने अलोंकारोों क  
े काव्य शोभा का हिर्धायक र्धमथ माना िै। ‘काव्यशोभाकरान् र्धामाथन् अलोंकारान्   
प्रचक्षते।’ काव्य में शब्द और अर्थ का सिभाि िोता िै। इसहलए अलोंकार शब्द और अर्थ दोनोों की शोभा   
िृहद्व करते िैं। शब्द और अर्थ एक द  
ूसरे क  
े पूरक िैं। अर्ाथत् ‘अलोंकरोहत इहत अलोंकारः।’ अलोंकारोों क  
े दो   
भेद िोते िैं-   
• शब्दार्िंकाि   
• अथालर्िंकाि   
शब्दार्िंकाि: जिााँ शब्दोों क  
े कारण कहिता में चमत्कार तर्ा सौोंदयथ आ जाता िै, ििााँ शब्दालोंकार िोता   
िेे  
ै। इसक  
े भी सात भेद िोते िैं हजनमें मुख्यतः चार िैंः-   
• अनुप्रास अर्िंकाि   
• यमक अर्िंकाि   
• श्लेष अर्िंकाि   
• वक्रोक्तक्त अर्िंकाि   
अनुप्रास अर्िंकाि- िणों की समानता (आिृहत्त) का नाम अनुप्रास िै। िणों की समानता से तात्पयथ यिााँ   
व्योंजनोों की समानता से िै। अनुप्रास का शाक्तब्दक अर्थ िै-अनुक  
ूल और प्रक  
ृष्ट सहन्निेश। जिााँ हकसी पोंक्तक्त क  
े   
शब्दोों में एक िी िणथ एक से अहर्धक िार आता िै, ििााँ अनुप्रास िोता िै। जैसे-   
चारूचन्द्र की चिंचर् हकिणें,   
खेर् ि ी ैं जर् थर् में।

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
18   
   
   
यमक अर्िंकाि- जिााँ कोई शब्द एक से अहर्धक बार आिें और प्रत्येक िान पर हभन्न-हभन्न अर्थ दे ििााँ   
यमक अलोंकार िोता िै। जैसे-   
कनक कनक ते सौ गुनी मादकता अहधकाय।   
वा खाए बौिाए जग, या पाये बौिाए।   
यिााँ कनक शब्द दो बार आया िै। दोनो का अर्थ अलग िै, पिले कनक का अर्थ िै- र्धतूरा, द  
ूसरे का अर्थ िै-   
सोना।   
श्लेर् अलोंकार- श्लेर् का अर्थ िोता िै हचपका हुआ यिााँ एक शब्द में कई अर्थ हचपक  
े िोते िैं ििााँ पर श्लेर्   
अलोंकार िोता िै। जैसे-   
िह मन पानी िाक्तखए, हबना पानी सब सून।   
पानी गए न उबिे, मोहत, मानस चून।।   
यिााँ पानी क  
े तीन अर्थ िैं- मोती क  
े सार् काोंहत, मनुष्य क  
े सार् इज़्ज़त और चूने क  
े सार् जल। पानी का एक   
से अहर्धक अर्थ िोने क  
े कारण यिााँ पर श्लेर् अलोंकार िै।   
वक्रोक्तक्त अर्िंकाि- जिााँ बात हकसी एक आशय से किी जाए और सुनने िाला उससे हभन्न या द  
ूसरा अर्थ   
लगा ले, ििॉं िक्रोक्तक्त अलोंकार िोता िै। जैसे-   
गौिवशाहर्नी प्यािी मािी, सदा तुम ी इक इष्ट अ ो।   
 ौिं न गऊ, नह िं ौिं अवशा, अहर्नी ँॅ  
ू न ी अस का े क ो।।   
स्पष्टीकरण-हशि पािथती से कि रिे िैं- ‘‘िे गौरिशाहलनी हप्रये, तम्ही िमारी सदा क  
े हलए इष्टदेिी िो।’’ पािथती   
जी गौरि"ेाेाहलनी शब्द को तीन टुकड़ोों मे भोंग कर देती िै- एक गौ (गाय), अिशा (िसा रहित), अहलनी   
(भ्रमरी) और किती िैं- मैं न गौउ िाँे  
ू न आिसा िाँे  
ू न अहलनी िाँे  
ू। हफर आप मुर्े गौरिशाहलनी क्ोों कि   
रिे िैं। यिााँ पािथती ने हशि क  
े अभीष्ट अर्थ से हभन्न अर्थ हलया।   
अथालर्िंकाि- जिााँ अर्थ क  
े कारण कहिता में चमत्कार तर्ा सौोंदयथ आ जाता िै। ििााँ पर अर्ाथलोंकार िोता   
िेे  
ै। अर्ाथलोंकार हनम्न भेद िैं-   
उपमा- जिााँ एक ििु की समता (तुलना) द  
ूसरी ििु से की जाए ििाँेा उपमा अलोंकार िोता िै। जिााँ   
उपमेय और उपमान में गुण आहद क  
े सादृश् का प्रहतपादन िो ििााँ उपमा अलोंकार िोता िै। उपमा का   
शाक्तब्दक अर्थ िै- उप(समीप)$मा (मापना/तौलना) जिााँ दो हभन्न पदार्ो (उपमेय और उपमा) को समीप   
लाकर उनकी तुलना जाए ििॉं उपमा अलोंकार िोता िै। उपमा क  
े चार अोंग िोते िैं-   
• उपमेय- हजसकी उपमा दी जाए उसे उपमेय किते िैं।   
• उपमान- हजससे उपमा दी जाए िि उपमान िै।

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
19   
   
   
• साधािण धमल- उपमेय और उपमान क  
े मध्य समान गुण।   
• वाचक शब्द- उपमेय और उपमान क  
े मध्य समानता बताने िाला शब्द।   
रूपक अलोंकार- जिााँ उपमेय में उपमान का हनर्ेर्ध-रहित आरोप िोता िै ििााँ रूपक अलोंकार िोता िै।   
आरोप का अर्थ िै एक ििु का द  
ूसरे ििु क  
े सार् इस प्रकार रखना हक दोनो का अभेद िो जाये। इस   
प्रकार रूपक में उपमेय और उपमान का अभेद हदखाया जाता िै। उपमा में दोनोों का सादृश् हदखाया जाता   
िै और रूपक में दोनोों का अभेद। जैसे-   
अहतश्योक्तक्त अर्िंकाि - जिााँ हकसी ििु का बढ़ा-चढ़ाकर िणथन हकया जाये ििााँ पर अहतश्ोक्तक्त   
अलोंकार िोता िै। जैसे-   
 नुमान की पूँछ में र्गन न पाई आग।   
र्िंका हसगिौ जर् गई, गए हनसाचि भाग।।   
िनुमान की पूाँछ में आग लग न पाई और लोंका जल गई। यि अहतश्ोक्तक्त पूणथ िणथन िै अतएि यिााँ पर   
अहतश्ोक्तक्त अलोंकार िेे  
ैे  
ों।   
सिंदे अर्िंकाि- जिााँ हकसी ििु को देखकर सों"ेाय बना रिे, हन"चय न िो ििााँ सोंदेि अलोंकार िोता िै।   
जैसे-   
   
 सािी बीच नािी ै, हक नािी बीच सािी ै।   
   
सािी ी हक नािी ै, हक नािी ी की सािी ै।।   
   
उपयुथक्त दोिे में साड़ी और स्त्री (नारी) क  
े बीच कोई भेद स्पष्ट निीों िो पा रिा िै और दोनोों क  
े बीच सोंदेि   
बराबर बना रि रिा िै हक कौन स्त्री िै? और कौन ििुगत साड़ी िै। इसहलए यिााँ सोंदेि अलोंकार िोगा।   
भ्राक्तिमान अर्िंकाि- जिााँ समता क  
े कारण हकसी ििु में (उपमेय) अन्य ििु का (उपमान) भ्रम िो   
जाए। ििााँ भ्राक्तन्तमान अलोंकार िोता िै।   
हविोधाभास अर्िंकाि- जिाँेा दो हिरोर्धी पदार्थ का सोंयोग एक सार् हदखाया जाये तब हिरोर्धाभास   
अलोंकार िोता िै।   
या अनुिागी हचत्त की, गत समुर्ौिं नह िं कोय।   
ज्ोिं-ज्ोिं बूड़ैं श्याम-िँग, त्योिं-त्योिं उज्ज्वर् ोय।।   
भक्त का हचत्त घनश्ाम क  
े काले रोंग में ज्यो-ज्योों ड  
ूबता िैं, त्योों-त्योों िि सफ  
ेद िोता जाता िै। काले रोंग में   
ड  
ूबने से ििु काली िो जाती िै, उजली निीों। इस प्रकार श्वेत और श्ाम का सोंयोग हदखाने क  
े कारण   
हिरोर्धााभास अलोंकार िै।

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
20   
   
   
िस   
रस का अर्थ िै ‘आनोंद’। रस की अनुभूहत को िी रसानुभूहत, आनोंदानुभूहत अर्िा सौोंदयाथनुभूहत किते िैं।   
तीसरी शताब्दी में भरतमुहन ने रस को स्पष्ट करते हुए किा- ‘‘हिभािनुभाि व्यहभचार सोंयोगाहद रस हनष्पहत्त’’   
अर्ाथत् हिभाि, अनुभाि, व्यहभचारी भाि क  
े सोंयोग से रस की हनष्पहत्त िोती िै। रस क  
े प्रारोंहभक हिकास में   
भरतमुहन ने क  
ेिल आठ प्रकार क  
े रसोों की िापना की हकन्तु अब रसोों की सोंख्या 10 मानी गई िै।   
हवभाव- हिभाि का अर्थ िोता िै- रसानुभूहम क  
े कारण। सह्नदय क  
े ह्नदय में क्तित िाई भाि को आस्वादन   
योग्य बनाने िाले उपादानोों को हिभाि किते िैं। ये तीन प्रकार क  
े िोे  
ेते िैं-   
• आर्िंबन- हजस ििु या व्यक्तक्त क  
े कारण िाई भाि जागृत िोता िै उस आलोंबन हिभाि किते िैं।   
जैसे-नायक, नाहयका, प्रक  
ृहत आहद।   
• उद्दीपन- िाई भाि को उद्दीि या तीव्र करने िाले कारण उद्दीपन किलाते िैं। जैसे नाहयका का   
रूप सौोंदयथ।   
• आश्रय- हजसक  
े ह्नदय में भाि उत्पन्न िोता िै उसे आश्य किते िैं।   
अनुभाव- मनोगत भाि को व्यक्त करने िाले शारीररक और मानहसक चेष्टाए  
ँ अनुभाि िै। अनुभाि भाि क  
े   
बाद उत्पन्न िोते िैं। इसहलए इन्ें अनुभाि (भाि का अनुसरण करने िाला) किते िैं। अनुभाि मुख्यतः दो   
प्रकार क  
े िोते िैं।   
• काहयक- काहयक अनुभाि शरीर की चेष्टाओों को किते िैं। जैसे, िार् से इशारा करना, हनश्वास और   
उच्छ्वास।   
• साक्तत्वक- जो शारीररक चेष्टाएे  
ॅे  
ों स्वाभाहिक रूप से स्वतः उत्पन्न िो जाती िै। उन्ें साक्तत्वक भाि   
किते िैं।   
सोंचारी भािः- जो भाि मन क  
े क  
ेिल अल्प काल तक सोंचरण कर क  
े चले जाते िैं िे सोंचारी भाि किलाते िैं।   
इन्ीों का द  
ूसरा नाम व्यहभचारी भाि िै। इनकी सोंख्या 33 िै।   
रस क  
े भेद- नाट्यशास्त्र क  
े रचहयता भरत ने आठ रस मान िै और आचायथ मम्मट और हिश्वनार् ने रसोों की   
सोंख्या 9 मानी िै। आगे चलकर िात्सल्य और भक्तक्त रस की कल्पना की गई िै।   
शृंगार िस- इसका िाई भाि ‘रहत’ िै। नायक नाहयका आलोंबन हिभाि िै। नायक-नाहयका, प्रेम चेष्टाोंए,   
आहद इसक  
े उ्ददीपन िै। कटाक्ष, चुम्बन, आहलोंगन आहद इसक  
े अनुभाि िै। िर्थ लज्जा, उत्सुकता आहद   
सोंचारी भाि। श्ोंे  
ृगार रस क  
े दो भेद िै-   
• सोंयोग श्ृोंगार- नायक नाहयक क  
े हमलन क  
े क्तिहत में सोंयोग शोंगार िोता िै।   
• हियोग शृंगार-नायक नाहयका क हमलन क  
े पिात एिों हमलन से पूिथ की तड़प की क्तिहत को हियोग   
श्ृोंगार किते िैं।

Study IQ   
ह िंदी साह त्य   
   
21   
   
   
वीि िस- इसका िाई भाि उत्साि िै। ‘शत्रु’ आलोंबन िै शत्रु की ललकार, रणिाद्य, अस्त्र-शस्त्र की र्ोंकार,   
चारणोों द्वारा हकया जाने िाला गौरि गान आहद इसक  
े उद्दीपन िै। नेत्रें का लाल िो जाना, दपथयुक्त िाणी,   
भुजाओों का फड़कना आहद इसक  
े अनुभाि िै। िर्थ, गिथ, र्धृहत, उग्रता आहद सोंचारी भाि इसे पुष्ट करते िैं।   
िौद्रिस- इसका िाई भाि क्रोर्ध िै। शत्रु या शत्रु क  
े समर्थक तर्ा अन्य कोई व्यक्तक्त हजस पर क्रोर्ध हकया   
जाए इसक  
े आलोंबन िै। शत्रु द्वारा किे गए कठोर िचन या उसक  
े द्वारा हकये गए अहनष्ट कायथ इसक  
े उद्दीपन   
िै। नेत्रें का लाल जो जाना, िोठ काटना, गजथन तजथन, क  
ोंप, क्र  
ूर दृहष्ट से देखना आहद इसक  
े अनुभाि िै। मद,   
अमर्थ, उग्रता आहद इसक  
े सोंचारी भाि इसका पोर्ण करते िैं।   
अदभुत रस- इसका िाई भाि ‘हिस्मय’ (आियथ) िै। आलोंबन अलौहकक ििु या कायथ िै। अलौहकक ििु   
को गुण-कीतथन इसका उद्दीपन िै। िम्भ, स्वेद, रोमाोंच, गदगद, स्वर, सोंभ्रम, नेत्र, हिकास आहद इसक  
े   
अनुभाि िै। हितक  
थ आिेग, िर्थ आहद इसक  
े सोंचारी भाि िै।   
वीभत्सिस- इसका िाई भाि ‘जुगुप्सा’ या घृणा िैं। माोंस, रूहर्धार, चिी िनमन आहद इसक  
े आलोंबन िै।   
कीड़ोों का हिलहिलाना, पशुओों का माोंस नोचना, साँड़ार्धा आहद इसक  
े उद्दीपन िै। मुाँि हबचकाना, नाक   
हसकोड़ना, र्ूकना आहद चेष्टायें इसक  
े अनुभाि िैं।   
भयानक िस- इसका िाई भाि भय िै। भयानक ििु, बलिान-श=े  
ुेा आहद इसक  
ें आलोंबन िै।   
हनजथनता, अपररचत आिाजें, आलोंबन का अ्टठािस आहद हक्रयाए  
ों उद्दीपन का कायथ करती िै। चीखना-  
हचल्लाना, हघग्घी बाँर्धा जाना, भागना आहद अनुभाि िै। शोंका, हचन्ता, त्रस, आिेग, आहद सोंचारी भाि िैं।   
शािंतिस- इसका िाई भाि हनिेद अर्िा शम िै। सोंसार की असारता का बोर्धा, परमािा-हचतोंन आहद   
इसक  
े आलोंबन िैं। पहित्र तीर्थ, सत्सोंग, शास्त्र-हचतोंन आहद इनक  
े उद्दीपन िै। िर्थ, स्मृहत, महत आहद इसक  
े   
सोंचारी भाि िैं। रोमाोंच, सोंसार-भीरूता आहद इसक  
े अनुभाि िै। तत्व ज्ञान से प्राि हनिेद िी शाोंतरस का   
िाई भाि िै।   
वात्सर् िस- इसका िाई भाि ‘िात्सल्य प्रेम’ िै। बालक आलम्बन िै। बालक की चेष्टायें उद्दीपन िै। अोंग   
स्पशथ, चुम्बन, रोमाोंच आहद अनुभाि िै। िर्थ, गिथ, हचन्ता, आशोंका आहद सोंचारी भाि िै। ‘ित्सल रस’ को इस   
इलए मान्यता दी गई िै हक इसका चमत्कार अन्य रसोों से हभन्न िै।   
करूण िस- इसका िाई भाि ‘शोक’ िै। स्वजनोों का पराभि या हकसी भी व्यक्तक्त की िीनाििा या हिनष्ट   
व्यक्तक्त इसक  
े आलोंबन िै। हप्रय जनोों का दाि कमथ, उनक  
े िस्त्रभूर्णाहद का दृश् तर्ा उनक  
े कायो को   
श्िण उद्दीपन िै। रोदन, उच्छ्वास, हििणथता, भूहम-पतन, आहद इसे अनुभाि िै। हनिेद, ग्लाहन, स्मृहत, दैन्य,   
हचन्ता, जड़ता, आहद इसक  
े सोंचारी भाि िै।   
   
-----------------------------------------------------